

○ 02 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ○

⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇐

]] 1]] होमवर्क (Marks: 5*4=20)

>> *मुख से सदैव रतन ही निकाले ?*

>> *देहि अभिमानी बनने की प्रैक्टिस की ?*

>> *एक की याद में मन को एकाग्र कर मनमनाभव होकर रहे ?*

>> *हिम्मत का एक कदम आगे बढ़ा बाप की हज़ार गुना मदद का पात्र बने ?*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

☼ *तपस्वी जीवन* ☼

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

~◇ जब स्वयं को अकालमूर्त आत्मा समझेंगे तब अकाले मृत्यु से, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकोगे। *मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन है - अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना। देह-अभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ मिट जायेंगी।*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

]] 2]] तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➤➤ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*



☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

☉ *श्रेष्ठ स्वमान* ☉



✽ *"में अतीन्द्रिय सुख में रहने वाली आत्मा हूँ"*

~◇ सदा अतीन्द्रिय सुख में रहते हो? *अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आत्मिक सुख। इन्द्रियों का सुख नहीं लेकिन आत्मिक सुख। आत्मा अविनाशी है तो आत्मिक सुख भी अविनाशी होगा। इन्द्रियाँ खुद ही विनाशी हैं तो सुख भी विनाशी होगा। कोई भी विनाशी यानी थोड़े समय का सुख नहीं चाहते हैं।* अगर किसी को भी कहो - 2 घण्टे का सुख ले लो और 22 घण्टे का दुःख ले लो तो कौन मानेगा। यही सोचेगा कि सदा सुख हो, दुःख का नाम-निशान न हो।

~◇ तो अतीन्द्रिय सुख अविनाशी है। इन्द्रियों के सुख के अनुभवी भी हो और अतीन्द्रिय सुख के अनुभवी भी हो। तो क्या अच्छा लगता है? अतीन्द्रिय सुख अच्छा या इन्द्रियों का सुख अच्छा? *तो अच्छी चीज को कभी छोड़ा नहीं जाता, भूला नहीं जाता, भूलना चाहें तो भी नहीं भूलेंगे। तो सदा अतीन्द्रिय सुख में रहने वालों के पास दुःख का नाम-निशान नहीं आ सकता, असम्भव।* कई कहते हैं - मेरे को दुःख नहीं होता लेकिन दूसरा दुःख देता है तो क्या करें? दूसरा देता है तो लेते क्यों हो? कोई भी चीज आपको दे और आप नहीं लो तो वह किसके पास रहेगी? उसके पास ही रहेगी ना।

~◇ *देने वाले तो देंगे, उनके पास है ही दुःख लेकिन आप नहीं लो। आपका स्लोगन है - 'सुख दो, सुख लो। न दुःख दो, न दुःख लो'। लेकिन गलती कर देते हो। इसलिए थोड़ी दुःख की लहर आ जाती है। कोई दुःख दे तो उसे भी

परिवर्तन कर उसको सुख दे दो, उसको भी सुखी बना दो। सुखदाता के बच्चे हो, सुख देना और सुखी रहना - यही आपका काम है।*

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

[[3]] स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➤➤ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

☉ *रूहानी ड्रिल प्रति* ☉

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

~◊ ये मन बहुत चंचल है और बहुत क्वीक है, एक सेकण्ड में आपको फारेन घुमाकर आ सकता है तो क्या सुना? बालक सो मालिक। *ऐसे नहीं खुश रहना - बालक तो बन गये, वर्सा तो मिल गया लेकिन अगर वर्से के मालिक नहीं बने तो बालक-पन क्या हुआ?*

~◊ *बालक का अर्थ ही है मालिक। लेकिन स्वराज्य के भी मालिक बनो।* सिर्फ वर्से को देख करके खुश नहीं हो, स्वराज्य अधिकारी बनो। इतनी छोटी-सी आँख बिन्दी है, वो भी धोखा दे देती है तो मालिक नहीं हुए तभी धोखा देती है तो बापदादा सभी बच्चों को स्वराज्य अधिकारी राजा देखना चाहते हैं।

~◊ अधिकारी, अधीन नहीं रहेगा। समझा? क्या बनेंगे? बालक सो मालिक। *रावण की चीज को तो यहाँ हॉल में ही छोड़कर जाना।* ये तपस्या का स्थान है ना तो तपस्या को अग्नि कहा जाता है। तो अग्नि में खत्म हो जायेगा।

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

॥ 4 ॥ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➤➤ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

☉ *अशरीरी स्थिति प्रति* ☉

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

~◊ *अन्तिम लक्ष्य पुरुषार्थ के लिए कौन-सा है? वह है- अव्यक्त फ़रिश्ता हो रहना। अव्यक्त रूप क्या है? फ़रिश्तापन। उसमें भी लाइट रूप सामने है- अपना लक्ष्य। वह सामने रखने से जैसे लाइट के कार्ब में यह मेरा आकार है।* जैसे वतन में भी अव्यक्त रूप देखते हो, तो अव्यक्त और व्यक्त में क्या अन्तर देखते हो? व्यक्त पाँच तत्वों के कार्ब में हैं और अव्यक्त लाइट के कार्ब में हैं। लाइट का रूप तो है, लेकिन आस पास चारों ओर लाइट ही लाइट है, जैसे कि लाइट के कार्ब में, यह आकार दिखाई देता है। *जैसे सूर्य को देखते हो, तो चारों ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में, सूर्य का रूप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है, लेकिन उसके चारों ओर भी सूर्य की लाइट परछाई के रूप में फैली हुई दिखाई देती है और लाइट में विशेष लाइट दिखाई देती है। इसी प्रकार से, 'मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ'- यह तो लक्ष्य है ही। लेकिन मैं आकार में भी कार्ब में हूँ।* चारों ओर अपना स्वरूप लाइट ही लाइट के बीच में स्मृति में रहे और दिखाई भी दे तो ऐसा अनुभव हो। *जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रूप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रूपी दर्पण में, अपना यह रूप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलेते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि 'मैं लाइट रूप हूँ, मैं फ़रिश्ता चल रहा हूँ और मैं फ़रिश्ता बात कर रहा हूँ।' तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।*

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

]] 5]] अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➤➤ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*



]] 6]] बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✽ *"ड्रिल :- चुप रहकर बाप को याद करना"*

➤➤ _ ➤➤ एक ऊँची पहाड़ी से प्रकृति के सौंदर्य को निहारते हुए मैं आत्मा...
*ईश्वर पिता को पाकर ऊँची हो चली, मन और बुद्धि की स्थिति के चिंतन में
खो जाती हूँ..*. मीठे बाबा ने सच्चे ज्ञान को देकर... *भीतर के आनंद का जो
स्वाद चखाया है... उसको जीकर मैं आत्मा कितनी तृप्त हो गयी हूँ..*. कभी
बाह्य मुखता और पुरानी दुनिया में गर्दन तक फंसी थी... आज अंतर्मुखता की
गहरी गुफा में मीठे बाबा की यादों में मदमस्त हूँ... *शब्दों से परे, आवाज से
परे भीतर, सच्चे आनन्द से छलक रही हूँ..*. कितना प्यारा जादु मीठे बाबा ने
किया है... दिल की यह बात सुनाने... अपने प्रियतम बाबा के पास उड़ चलती
हूँ...

✽ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अमूल्य ज्ञान रत्नों से भरपूर करते हुए
कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... कर्मक्षेत्र पर कार्य करते हुए मनबुद्धि से
ईश्वरीय यादों में खोये रहो... बुद्धि का योग निरन्तर मीठे बाबा संग जुड़ा रहे...
*हर साँस हर संकल्प से मीठे बाबा को याद कर, सतयुगी वर्से के अधिकारी
बनो.*..

➤➤ _ ➤➤ *मैं आत्मा मीठे बाबा के असीम प्यार में झूमते हुए कहती हूँ :-*
"मीठे मीठे बाबा मेरे... मैं आत्मा *आपको पाकर. आपके असीम प्यार और ज्ञान

रत्नों को पाकर कितनी मालामाल हूँ..*. मैं आत्मा अंतर्मुखता की गुफा में आपकी मीठी यादों में हर पल खोयी हुई हूँ... सच्ची खुशियों में झूम रही हूँ..."

* *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को अपनी शक्तियों से भरकर समझाते हुए कहते हैं :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... देह के प्रभाव से मुक्त होकर, अशरीरी अवस्था को पक्का करो... *अपने आत्मिक स्वरूप में टिक कर, सच्चे बाबा की सच्ची यादों में सदा मुस्कराते रहो.*.. दिव्य गुणों की धारणा कर सतयुग के मीठे सुखों के मालिक बनो..."

»→ _ »→ *मैं आत्मा प्यारे बाबा के गहरे प्यार के नशे में डूबकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे दुलारे बाबा... *आपने अपनी बाँहों में भरकर, मुझे दुखों के दलदल से निकाल, सदा का सुखी बनाया है.*.. मैं आत्मा आपके दिए ज्ञान धन और यादों की सौगात से धनवान् हूँ... रोम रोम से आपके प्यार में डूबी हुई हूँ..."

* *मीठे बाबा मुझ आत्मा को पुरानी दुनिया के प्रभाव से मुक्त कराते हुए कहते हैं :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वरीय यादों ही सच्चा सहारा हैं... यही आधार सारे सुखों का आधार हैं.. मीठे बाबा की यादों में मन बुद्धि को सदा ही लगाये रहो... *इन यादों में बाह्यमुखता की दरकार नहीं... बस भीतर ही भीतर मीठे बाबा संग जुड़े रहो..*.

»→ _ »→ *मैं आत्मा अपने प्यारे बाबा के सारे प्यार को अपने मन रूपी दामन में समाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... *आपने मुझे ज्ञान और योग की सच्ची राहों पर चलाकर... जीवन की कितना प्यारा और दिव्यता से। हर दिया है.*.. आपकी यादों में सच्चे आनन्द को पाकर मुझ आत्मा ने सारे सुख पा लिए हैं..."मीठे बाबा संग सच्चे प्रेम के अहसासों को जीकर मैं आत्मा... साकार जगत में लौट आयी..."

॥ 7 ॥ योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

❁ *"ड्रिल :- मुख से रत्न ही निकलने हैं*"

»→ _ »→ अंतर्मुखता की गुफा में बैठ, एकांतवासी बन अपने प्यारे पिता की याद में अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करते ही मैं अनुभव करती हूँ जैसे *मेरी ब्रह्मा माँ अविनाशी ज्ञान रत्नों से मेरा श्रृंगार कर, मुझे आप समान रूप बसन्त बनाने के लिए अपने अव्यक्त वतन में बुला रही हैं*। सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप में अपनी ब्रह्मा माँ और उनकी भृकुटि में चमक रहे अपने शिव पिता को मैं मन बुद्धि के दिव्य नेत्र से देख रही हूँ और उनकी अव्यक्त आवाज जो मुझे पुकार रही है वो भी मैं स्पष्ट सुन रही हूँ। *बाहें पसारे अपने इंतजार में खड़ी अपनी ब्रह्मा माँ की यह अव्यक्त आवाज मुझे जल्दी से जल्दी उनके पास पहुंचने के लिए व्याकुल कर रही है*।

»→ _ »→ जैसे एक माँ अपने बच्चे के इंतजार में टकटकी लगा कर दरवाजे को देखती रहती है ऐसा ही स्वरूप अपने इंतजार में खड़ी अपनी ब्रह्मा माँ का मैं देख रही हूँ। *बिना एक पल की भी देरी किये अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर को मैं धारण करती हूँ और साकारी देह से बाहर निकल कर अपने अव्यक्त वतन की ओर चल पड़ती हूँ*। अपने लाइट के फ़रिश्ता स्वरूप में स्थित, जल्दी से जल्दी अपनी ब्रह्मा माँ और अपने शिव पिता के पास पहुंचने का संकल्प जैसे ज्ञान और योग के पंख लगाकर मुझे तीव्र गति से उड़ने का बल दे रहा है। *ज्ञान और योग के इन पंखों की सहायता से बहुत तीव्र उड़ान भर कर मैं फरिश्ता सेकेण्ड से भी कम समय में साकारी दुनियाँ को पार कर जाता हूँ और उससे ऊपर उड़कर अति शीघ्र पहुँच जाता हूँ अपनी ब्रह्मा माँ के पास*।

»→ _ »→ जैसे अपने बच्चे को देखते ही माँ दौड़ कर दरवाजे पर आती है और उसे अपने गले लगा लेती है ऐसे ही मुझे देखते ही मेरी ब्रह्मा माँ दौड़ कर मेरे पास आती है और अपनी बाहों में भरकर अपना असीम प्यार मुझ पर लुटाने लगती है। अपनी ब्रह्मा माँ के नयनों में अपने लिए समाये अथाह स्नेह को मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ। *अपना असीम स्नेह मुझ पर लुटाकर, मेरा हाथ पकड़ कर वो मझे अपने पास बिठा कर, बड़े प्यार से मझे निहार रही है

और अपने हाथों से अब मेरा श्रृंगार कर रही है, ज्ञान के एक - एक अमूल्य रत्न से मुझे सजाते हुए मेरी ब्रह्मा माँ मुझ पर बलिहार जा रही है*। मुझे आप समान रूप बसन्त बनाने के लिए दिव्य गुणों से मुझे सजाकर, मर्यादाओं के कंगन पहना रही है।

» _ » एक दुल्हन की तरह अविनाशी ज्ञान रत्नों के श्रृंगार से सज - धज कर अब मैं ज्ञान सागर अपने अविनाशी साजन के पास, स्वयं को ज्ञान के अखुट खजानों से भरपूर करने उनके धाम जा रही हूँ। *ज्ञान रत्नों के श्रृंगार से सजे अपने निराकारी सुन्दर सलौने स्वरूप में स्थित होकर, अब मैं अव्यक्त वतन से ऊपर निराकार वतन की ओर बढ़ रही हूँ*। देख रही हूँ अपने अविनाशी शिव साजन को अपने सामने विराजमान अपने अनन्त प्रकाशमय स्वरूप में अपनी किरणो रूपी बाहों को फैलाये हुए। बिना विलम्ब किये सम्पूर्ण समर्पण भाव से मैं उनकी किरणो रूपी बाहों में समा जाती हूँ। *मेरे ज्ञान सागर शिव साजन के ज्ञान की रिमझिम फुहारें मुझ आत्मा सजनी के ऊपर बरसने लगती हैं*।

» _ » ज्ञान योग की रिमझिम फुहारों के स्पर्श से रूप बसन्त बन मैं आत्मा परमधाम से नीचे आ जाती हूँ। विश्व ग्लोब पर स्थित होकर, विश्व की सर्व आत्माओं के ऊपर ज्ञान वर्षा करते हुए मैं साकार लोक में प्रवेश करती हूँ और अपने साकार तन में भृकुटि के अकालतख्त पर आकर मैं विराजमान हो जाती हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर ज्ञान योग को अपने जीवन में धारण कर, अपने मुख से सदा ज्ञान रत्न निकालते हुए, अब मैं सबको अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दे रही हूँ। ज्ञान सागर अपने शिव पिता की याद में रहकर, स्वयं को उनके ज्ञान की किरणो की छत्रछाया के नीचे अनुभव करते, अपनी बुद्धि रूपी झोली सदा ज्ञान रत्नों से भरपूर करके, रूप बसन्त बन मैं सबको अविनाशी ज्ञान रत्नों से सम्पन्न बना रही हूँ*।

॥ 8 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

- ☀ *मैं एक कि याद में मन को एकाग्र कर मनमनाभव रहने वाली आत्मा हूँ।*
- ☀ *मैं एवररेडी सम्पूर्ण आत्मा हूँ।*

➤ ➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 9 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

- ☀ *मैं आत्मा सदैव हिम्मत के कदम आगे बढ़ाती हूँ ।*
- ☀ *मैं आत्मा सदा बाप की हजार गुणा मदद की पात्र बन जाती हूँ ।*
- ☀ *मैं हिम्मतवान आत्मा हूँ ।*

➤ ➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 10 ॥ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

☀ अव्यक्त बापदादा :-

➤ ➤ 1. डाक्टर्स का वर्ग भी बापदादा को सेवाधारी ग्रुप देखने में आता है। सिर्फ थोड़ा समय इस सेवा को भी देते रहो। *कई डाक्टर्स कहते हैं हमको फुर्सत ही नहीं होती है। फुर्सत नहीं होती होगी फिर भी कितने भी बिजी हों, अपना एक कार्ड छपा के रखो, जिसमें यह इशारा हो, अट्रैक्शन का कोई स्लोगन हो. तो और आगे सफा चाहते हो तो यह यह एडेसेज हैं. जहाँ आप

रहते हो वहाँ के सेन्टर्स की एड्रेस हो यहाँ जाकर अनुभव करो, कार्ड तो दे सकते।* जब पर्चा लिखकर देते हो यह दवाई लेना, यह दवाई लेना। तो पर्चा देने के समय यह कार्ड भी दे दो। हो सकता है कोई कोई को तीर लग जाए क्योंकि डाक्टरों की बात मानते हैं और टेन्शन तो सभी को होता है। एक प्रकृति की तरफ से टेन्शन, परिवार की तरफ से टेन्शन और अपने मन की तरफ से भी टेन्शन। तो टेन्शन फ्री लाइफ की दवाई यह है, ऐसा कुछ उसको अट्रैक्शन की छोटी सी बात लिखो तो क्या होगा, आपकी सेवा के खाते में तो जमा हो जायेगा ना। ऐसे कई करते भी हैं, जो नहीं करते हैं वह करो। डबल डाक्टर हो सिंगल थोड़ेही हो। डबल डाक्टर हो तो डबल सेवा करो।

»→ _ »→ 2. जब पेशेन्ट आते हैं। आपके पास तो पेशेन्ट ही आयेंगे। तो पेशेन्ट हमेशा डाक्टर को भगवान का रूप समझते हैं और भावना भी होती है। *अगर डाक्टर किसको कहता है यह चीज नहीं खानी है, तो डर के मारे नहीं खायेंगे और कोई गुरु कहेगा तो भी नहीं मानेंगे।* तो मेडीकल वालों को सहज सेवा का साधन है जो भी आवे उनको समय मुकरर करना पड़ता है, क्योंकि काम के समय तो आप कुछ कर नहीं सकते, लेकिन कोई ऐसा विधि बनाओ जो पेशेन्ट थोड़ा भी इन्ट्रेस्टेड हो, उनको एक टाइम बुलाकर और उन्हीं को 15 मिनट आधा घण्टा भी परिचय दो तो क्या होगा, आपकी सेवा बढ़ती जायेगी। सन्देश देना वह और बात है, सन्देश से खुश होते हैं लेकिन राजयोगी नहीं बनते हैं।

»→ _ »→ 3. *जब तक थोड़ा टाइम भी किसको अनुभव नहीं होता तब तक स्टूडेन्ट नहीं बन सकता।*

»→ _ »→ 4. *जिसको कोई भी अनुभव होता है वह छोड़ नहीं सकते हैं। बाकी काम तो अच्छा है, किसके दुख को दूर करना। कार्य तो बहुत अच्छा करते हो, लेकिन सदा के लिए नहीं करते हो। दवाई खायेंगे तो बीमारी हटेगी, दवाई बन्द तो बीमारी फिर से आ जाती है। तो ऐसी दवाई दो, जो बीमारी का नाम निशान नहीं हो, वह है मेडीटेशन।*

✽ *डिल :- "डबल डाक्टर होने का अनभव"*

»→ _ »→ मैं आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्वयं को स्थित करती हूँ और एक दम शांत अवस्था में अपने मन को केंद्रित करती हूँ... अपने इस संगमयुगी जीवन की प्राप्तियों को देख रही हूँ... *बाबा से मिली शक्तियों और ज्ञान रत्नों के खज़ानों को याद करती हूँ और उनका शुक्रिया अदा करती हूँ...* आपने मुझे मेरे हर दुख से मुक्त कर मेरे जीवन को खुशियों से भर दिया है...

»→ _ »→ मैं आत्मा सृष्टि के रंगमंच पर अपने पार्ट को प्ले करते हुए अन्य बहुत सी आत्माओं के संपर्क में आती हूँ... मैं देखती हूँ कि आज हर आत्मा किसी ना किसी कारण वश दुखी है... कुछ आत्मायें पूर्व जन्मों में किये पाप कर्म के कारण दुखों को भोग रही हैं तो कुछ आत्मायें अपने ही कड़े आसुरी स्वभाव संस्कार के वश हो औरों को भी दुख दे रही हैं और स्वयं भी दुखों से घिरी हुई हैं... जिस कारण वो स्वयं भी अशांत रहती हैं और उनके संपर्क में आने वाली आत्मायें भी अशान्ति का अनुभव करती हैं... *इन समस्त आत्माओं को मैं आत्मा अपने शांति के वाइब्रेशन देकर उनके मन को शांत कर रही हूँ...*

»→ _ »→ मैं आत्मा अपने कर्मक्षेत्र में भी बाबा के शक्तिशाली वाइब्रेशन चारों तरफ फैलाती हूँ... आज के इस तमोगुणी वातावरण में आत्माओं के शरीर के साथ साथ उनके मन भी बीमार हैं... समस्त आत्मायें क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, लालच, परचिन्तन, परदर्शन जैसी बीमारियों से ग्रसित हैं... *जैसे मेरे बाबा रूहानी डॉक्टर भी हैं वैसे ही मैं आत्मा भी अपने आत्मा भाइयों के लिए उनका रूहानी डॉक्टर बन उनकी इन सभी बीमारियों का इलाज कर उनको इन बीमारियों से मुक्त कर उनको सशक्त और निरोगी बना रही हूँ...*

»→ _ »→ मैं आत्मा अपने सभी भाई बहनों को बाबा का परिचय देती हूँ... *बाबा का परिचय पाकर आत्मायें उनसे अपना कनेक्शन जोड़कर उनसे सर्व शक्तियाँ प्राप्त कर रही हैं और अपने दुखों को अपनी बीमारियों को ठीक कर रही हैं... जिन आत्माओं को मैं आत्मा बाबा का परिचय देती हूँ उन्हें उमंग उत्साह दे आगे भी बढ़ाती जाती हूँ...* वो सभी आत्मायें बाबा से संबंध जोड़ उनके प्यार को अनुभव करती हैं... योग में नित नए अनुभव कर रही हैं और अपने सर्व दखों से छटती जा रही हैं...

»→ _ »→ मैं आत्मा किसी न किसी रूप में बाबा का परिचय आत्माओं को देती हूँ... निमित्त बन अपने चेहरे और चलन से सेवा करती हूँ... *बाबा से जुड़ कर आत्मार्ये अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो अपने गुणों और शक्तियों को इमर्ज कर रही हैं और राजयोग के अभ्यास से अपने को सशक्त बनाती जा रही हैं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स जरूर दें ।

ॐ शांति ॐ